॥ओ३म्॥

मिथ्या मकरसंक्रान्ति, कब तक मनाते रहेंगे?

वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति का एक अति महत्वपूर्ण पर्व है **मकरसंक्रान्ति**, यह दिवस चार मुख्य कारणों से एक अतिमहत्व का दिन है। इस दिन सूर्य एक ही साथ चार विशेष कार्य करता है। इन कार्यों को जानने के लिये जानना जरूरी है –

(१) पृथ्वी का अपनी धुरी पर सूर्य के सम्मुख पूरा-पूरा घूम जाना और

(२) सूर्य के चारों ओर एक अण्डाकार वृत्तीय पथ (क्रान्तिवृत्त) में पूरी यात्रा करते हुये पूरे एक वर्ष बाद फिर इस ही बिन्दु पर पहुंच जाना।

(३) शिशिर ऋतु, चान्द्र माघ मास और वैदिक तपस मास का प्रारम्भ

(४) उत्तरायणम् का प्रारम्भ

इस दिन पृथ्वी की तिर्यकता अधिकतम हो जाया करती है और इस कारण से ही सूर्य का उत्तर पथ पर प्रस्थान अर्थात् उत्तरायण अनिवार्य हो जाता है। अयन का अर्थ होता है वृत्ताकार मार्ग। अस्तु, उत्तरायण अथवा दक्षिणायण का अर्थ हुआ उत्तर अथवा दक्षिण मार्ग पर। जिस बिन्दु से यह उत्तरायण घटना घटित होती है ठीक उसी बिन्दु पर मकरसंक्रान्ति होती है। इसमें बहुत से शास्त्रीय एवं प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। **संक्रान्ति का अर्थ है संचरित या प्रसरित होना।** अथवा एक नये आयाम में अग्रेषित हो जाना। और मकर से तात्पर्य है पृथ्वी पर अवस्थित मकर रेखा और भचक्र पर अवस्थित क्रान्तिवृत्त का वह भाग जो पृथ्वी के मूल प्रस्थान बिन्दु से ९/१२ या २७० अंश की दूरी पर है। सूर्य उपस्थिति का इस बिन्दु पर बढ़ना और मकर रेखा पर लम्बवत परस्थिति में आ जाना। ३० अंश के ज्यामितीय कोण को राशि के नाम से जाना जाता है। अर्थात् ३० × ९ = २७० अंश पूरे करके सूर्य को अगली अर्थात् २७०-३०० अंश वाले भाग (राशि) में प्रविष्ट होता है। यही घटना है **मकरसंक्रान्ति**। पृथ्वी का ठीक इस स्थिति में हो जाना कि वहाँ से –

- सूर्य ठीक मकर रेखा पर लम्बवत हो जाये एवं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यदि उस क्षेत्र में कोई व्यक्ति खडा हो तो उसकी छाया लोप हो जायेगा।
- सूर्य का क्रान्तिवृत्त पर अधिकतम क्रान्ति प्राप्त करके उत्तराभिमुख चलना दिखने लगे, यही घटना है उत्तरायण होना। अधिकतम तिर्यक स्थिति के कारण सूर्य के सम्मुख पृथ्वी का एक हिस्सा अधिकतम होता है। जिधर अधिकतम हिस्सा होता है उस हिस्से में दिन अधिकतम बड़ा और दूसरे हिस्से की तरफ अधिकतम बड़ी रात होनी चाहिये।
- देवव्रत, भीष्म पितामह का "**माघोऽअयं सम्प्राप्तो मासः श्रेष्ठः युधिष्ठिरः**" यह वचन इसी घटना से प्राप्त माघ मास से है। अस्तु, सूर्य इसी दिन के बाद माघ मास या वैदिक तपस मास प्रारम्भ करता है। यह माह उत्तरायण का ही नहीं शिशिर ऋतु का भी प्रथम मास होता है, अर्थात् इस दिन शुरू होते हैं उत्तरायण, शिशिर ऋतु और माघ अथवा वैदिक तपस मास।

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
वैचारिक क्रान्ति के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत **सत्यार्थप्रकाश** अवश्य पढें।

॥ओ३म्॥

- मकरसंक्रान्ति माघ या वैदिक तपस मास, शिशिर ऋतु और उत्तरायण का शुभारम्भ यही हैं वे पूर्वोक्त चार कार्य जिनको आज सूर्य एक ही दिन सम्पन्न करता है और यह दिन आज की तारीख में २२ दिसम्बर का बनता है। १४, १५ अथवा १ से लेकर ३१ जनवरी तक के किसी भी दिन में नहीं।

कुछ लोग मकरसंक्रान्ति के प्रति भ्रम में हैं और अन्य को भी भ्रम में बनाये रखना चाहते हैं। उनका कहना है कि उत्तरायण तो २२ दिसम्बर को ठीक है परन्तु मकरसंक्रान्ति तो १४ जनवरी को ही होती है। यह बात शास्त्र प्रमाणों, गणितीय तथ्यों और दृग्गणित सिद्धान्तों के विपरीत है। उस कल्पना प्रसूत अवधारण पर आधारित है कि राशियां मेष, वृषभादि भेड़, बैल, केकड़ा, मटका, मछली आदि जैसी आकृतियॉ बनाये हुये हैं और यह भी की प्रत्येक राशि निश्चित नक्षत्रमान (सवा दो नक्षत्र) के अनुसार हैं। प्रत्यक्ष और दृग्ग (अर्थात् देखने से) प्रमाण है कि कोई भी नक्षत्र समान क्षेत्र में नहीं है १३२० का तो एक भी नक्षत्र नहीं है। जो विद्वान प्रत्येक नक्षत्र को १३२० के परिमाप से जानता है वह वास्तव में खगोलिकी (एस्ट्रोनोमी अथवा खगोल विद्या) के ज्ञान से शून्य है।

वैदिक ही नहीं बहुत-बहुत बाद के पौराणिक रचनाकारों ने भी अपने-अपने तरीके से इस सत्य को लोक पहुँच में रखने का प्रयास किया है कि नक्षत्र समान नहीं हैं। पौराणिक कथाओं में प्रजापति की २८ कन्याओं से चन्द्रमा के विवाह का प्रसंग है और चन्द्रमा पर यह अभियोग स्पष्ट किया गया है कि वह सभी पत्नीयों को समान रूप से समय नहीं देते। इस प्रसंग में प्रजापति की २८ कन्यायें २८ नक्षत्रों का प्रतिनिधित्व करती है, तथा स्पष्ट किया गया है कि चन्द्रमा सभी नक्षत्रों में समान रूप से समय व्यतीत नहीं करता है। यह प्रसंग जटिल ज्योतिषीय तथ्य को सरल कहानी में प्रस्तुत करने के सिवा और कुछ नहीं है।

नक्षत्रों से राशियों का सम्बन्ध असंभव है। इसीलिये भेड़, बैल, केकड़ा, मटका, मछली आदि की पहचान से राशियों को नियत करना गलत ही नहीं धार्मिक दृष्टिकोण से पाप है। वेद में २८ नक्षत्र स्पष्ट हैं (अथर्ववेद १९/७) लेकिन फलितज्योतिष की सिद्धि के लिये ३६० की सम विभाजक संख्या २७ को जबरन लिया गया है। अस्तु, ये राशियां नहीं अपितु क्रान्तिवृत्त की भ्रामक व्याख्या है।

भानोर्मकरसंक्रातेः षण्मासा उत्तरायणम्। कर्कादेस्तु तथैव च षण्मासा दक्षिणायणम्॥ सूर्यसिद्धान्त मानाध्याय १०॥

अर्थात्:- भानोर्मकरसंक्रातेः (भानु अर्थात् सूर्य की मकरसंक्रान्ति से है) षण्मासा उत्तरायणम (उत्तरायण के माघ, आषाढ़ आदि ६ महीने) कर्कादेस्तु तथैव च (ठीक उसी प्रकार कर्क संक्रान्ति से जानिये) षण्मासा दक्षिणायणम् (दक्षिणायण के ६ महीनों को।

ऐसे अन्य भी कई प्रमाण श्रीविष्णुपुराण, शिवमहापुराण और वराहमिहिरादि की कृतियों से दिये जा सकते हैं जो घोषणापूर्वक स्पष्ट करते हैं कि सूर्य की मकरसंक्रान्ति और उत्तरायण प्रारम्भ करने की स्थिति एक ही हैं, दो अलग-अलग नहीं।

इस सब के अतिरिक्त प्रत्यक्ष प्रमाण से भी, जो कि छायार्क साधन से देखने में आता है कोई भी जिज्ञासु स्वयं जान सकता है कि दक्षिणायण या उत्तरायण सूर्य के ९० अंश या फिर २७० अंश की स्थिति पर ही संभव है और इसीलिये द्रष्टव्य भी है। यही वास्तव में कर्क एवं मकरसंक्रान्तियों का गणितीय अर्थ भी है। श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक - २०६८ के पृ० २ पर यह गणित पूरी स्पष्टता से दी गई है।

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

वैचारिक क्रान्ति के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत **सत्यार्थप्रकाश** अवश्य पढें।

॥ओ३म्॥

श्री शिवमहापुराण में भगवान् शंकर ने जो उद्घोष किया है वही वैदिक धर्मियों के लिये शिरोधार्य होना चाहिये और उसमें संक्रान्तियों के महत्व को तो उजागर किया ही गया है साथ ही उत्तरायण/दक्षिणायण अयनों (मकर एवं कर्क संक्रान्ति) तथा सम्पात तिथियों (मेष एवं तुला संक्रान्ति) को विषुव (वसन्त एवं शरद विशुव) से जोड़कर कहा गया है। प्रमाण के लिये देखें –

तस्माद् दश गुण ज्ञेयं रवि संक्रमणे बुधाः। विषुवेतद् दशगुणमयने तद् दशस्मृतम॥

वराहमिहिर कृत पंचसिद्धान्तिका -३/२५ का कथन "**उद्गयनम् मकरादौ ऋतवः शिशिरादयश्च सूर्य वशात् द्विभवनं कालसमानं दक्षिणमयनं च कर्कटकात॥**" भी उत्तरायण, मकरसंक्रान्ति और शिशिर ऋतु के प्रारम्भ को एक ही दिन में घटित होना निरूपित करता है।

इन श्लोकों की व्याख्या को समझने पर सभी को स्पष्ट हो जाना चाहिये कि मकरसंक्रान्ति जनवरी में न कभी हुई है, न होगी और न हो सकती है। वह तो दिसम्बर में होती है, हो सकती है और होती रहेगी।

आचार्य दार्शनेय लोकेश, सम्पादक एवं गणितकर्ता

श्री मोहनकृति आर्ष तिथि पत्रक

सी-२७६, गामा-I, ग्रेटर नोएडा, उ०प्र० – २०१३१०

darshaney.smkatp@gmail.com

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

वैचारिक क्रान्ति के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत **सत्यार्थप्रकाश** अवश्य पढें।